E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(1): 204-206
Received: 10-11-2020
Accepted: 16-12-2020

रुचि पाण्डेय
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रुचि पाण्डेय
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

कुँवर नारायण का जीवन मूल्याश्रित भाव क्षितिज एवं काव्योपलब्धियों का अध्ययन

रुचि पाण्डेय

सारांश
कुँवर नारायण का स्वयं का वक्तव्य है – साहित्य जब सीधे जीवन से सम्पर्क छोड़कर वादग्रस्त होने लगता है, तभी उसमें वे ततव उत्पन्न होते है जो उसके स्वाभाविक विकास में बाधक होते है। जीवन से संपर्क का अर्थ केवल अनुभव मात्र नहीं बल्कि वह अनुभूति और मननशक्ति भी है, जो अनुभव के प्रति तीव्र और विचारपूर्ण प्रतिक्रिया कर सके। कोई अनुभव सार्थक तभी जाना जाएगा जब वह किसी महत्वपूर्ण परिणाम में प्रतिफलित हों और यह बिना एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखकर चले संभव नहीं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मेरा अभिप्राय उस उदार और सहिष्णु मनोवृत्ति से है जो जीवन को किसी पूर्वग्रह से पंगु करके नहीं देखती बल्कि उसके प्रति चहुमुखी सतर्कता बरतती है। कलाकार एक वैज्ञानिक के लिए जीवन में कुछ भी अग्राहय नहीं उसका क्षेत्र किसी वाद या सिद्धान्त विशेष का संकुचित दायरा न होकर वह संपूर्ण मानव परिस्थिति है जो उसके लिए एक अनिवार्य वातावरण बनाती है और जिसे उसका जिज्ञासु स्वभाव बराबर सोचता विचारता रहता है। कुँवर नारायण ने अपने रचनाधर्म में पौराणिक पात्र, मिथकीय चेतना एवं पारस्परिक साहित्य की अनुगूंजे प्रमुखता के साथ स्थान पाती हैं, उनका मानना है कि पौराणिक अतीत केवल हमारी स्मृति का हित्सा नहीं हैं वरन् वह बहुत कुछ आज भी हमारी मानसिकता के प्रतीक रूप से सजीव जीवंत और सक्रिय है।

मुख्यशब्द: कुँवर नारायण, जीवन मूल्याश्रित, क्षितिज, काव्योपलब्धिया

प्रस्तावना
कुँवर नारायण का जन्म 19 सितम्बर सन् 1927 में फैजाबाद के परम्परागत वैश्व परिवार में हुआ, आप दो भाई व एक बहन थे, माँ व बहन की टी.बी. से संक्रमित होने के कारण मृत्यु हो गई तथा कुँवर नारायण को किशोरावस्था में ही माँ व बहन के प्रेम से वंचित होना पड़ा। कुँवर नारायण व उनके बड़े भाई को उनके चाचा अपने साथ लेकर लखनऊ आ गए व इनके पिता ने फैजाबाद में ही रहने का निर्णय लिया कुँवर नारायण के पिता एक निष्ठावान व्यक्ति थे, कुँवर नारायण के काव्यों में उनके पिता के आदर्शों की झलकियाँ दृष्टान्वित हुई है। कुँवर नारायण ने सन् 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की तथा 38 वर्ष की आयु में आपका विवाह भारती गोइनका से हुआ (भारती कलकत्ता वि.वि. में अध्यापिका के पद पर कार्यरत थी) सन् 1967 में आपके पुत्र अपूर्व का जन्म हुआ।
इसके बाद अगर आपके साहित्यिक सफर पर दृष्टि डालें तो सन् 1956 में आपका पहला काव्य संग्रह 'चक्रव्यूह' प्रकाशित हुआ। 'चक्रव्यूह' के प्रकाशन के समय आप विदेश यात्रा पर थे, इस कारण आप शायद कवि के पहले काव्य प्रकाशन के रोमांच के अनुभव को अनुभूत नही कर पाए, सन् 1959 में 'तीसरा सप्तक' के प्रकाशन के साथ आप 'तीसरे सप्तक' के अग्रणी कवियों में सुमार किए गए, सन् 1961 में 'परिवेश : हम–तुम' का प्रकाशन, सन् 1979 में 'अपने सामने' का व सन् 1993 में 'कोई दूसरा नहीं' का प्रकाशन हुआ। प्रबन्ध काव्य 'आत्मजयी' का प्रकाशन सन् 1965 में हुआ व इस 'प्रबन्ध काव्य' के माध्यम से कुँवर नारायण को देश–विदेश में काफी ख्याति प्राप्त हुई व सन् 1969 में रोम से 'आत्मजयी' का इतावली में 'नचिकेता' नाम से अनुवाद से हुआ।
यदि जीवन विवरण पर दृष्टि डाले तो – सन् 1946–47 में आपका एक वर्ष मुम्बई में आचार्य नरेन्द्र देव के साथ रहना हुआ व उनके सान्निध्य में साहित्य और दर्शन के प्रति गहरी रुचि बनी। सन् 1952 में 'प्रतीक' में कविताओं और विदेशी अनुवादों का सर्वप्रथम प्रकाशन हुआ।

नवीनता की अग्रही कविताओं में जीवन मूल्य –
नयी कविता में मानव को उसके विसुद्ध रूप में प्रतिष्ठा मिली है, प्रयोगवादियों ने पुरानी रूढ़ियों का खण्डन करते हुए मानव जीवन मूल्यों को नयी ऊँचाइयाँ प्रदान की है, स्वयं कुँवर नारायण का मानना भी यही है, कि मानव जीवन से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं और उससे बढ़कर किसी अन्य वस्तु होने में भी विश्वास नहीं है। जीवन है तो सब कुछ है और वह नहीं तो कुछ नहीं, कुँवर नारायण के बारे में 'गिरिधर राठी' का वक्तव्य है।

कुँवर नारायण 'आत्मजयी' लिखने के बावजूद आध्यात्मिक या आध्यात्मवादी कवि नहीं है। 'आत्मजयी' में उन्होंने जीवन, मृत्यु, ईश्वर और मुक्ति जैसे प्रश्नों को अत्यधिक स्तर पर भी उठाया तो है, लेकिन उनका समाधान 'जीवन' में ही इसी संसार में खोजना चाहा है या कि वे संसार के अतलान्तों को छूकर और शायद उन्हें सार्थक न पाकर लौट आए हैं। उनकी जिज्ञासाएँ विशुद्ध दार्शनिक न होकर मानवीय है, 'मानवीय जीवन' और 'मानवीय संसार की जिज्ञासाएँ हैं।[1]

जीवन की चाह उसे भरपूर जीने का आवाहन कुँवर नारायण के काव्यों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। जीवन की धुरी पर कवि समस्या क्रियाकलापों को केन्द्रित करना चाहते हैं। कुँवर नारायण ने सदैव जीवन से जुड़ने की बात की, है हाँ 'बाजश्रवा के बहाने' इसका अपवाद अवश्य है, किन्तु यदि इसे छोड़कर देखा जाए तो उनके काव्यों में जीवन को भरपूर जीने की चाह सार्थक नजर आती है।

'अनामिका' कुँवर नारायण के बारे में लिखती है –

आधुनिकतावादी कवियों का आधुनिकता बोध एक हल्की–सी गीतात्मक आदर्शकातर संवेदना से खाली कभी नहीं रहा। भरे चौक का इकतारा बजाकर नाचते फकीरों की तरह यह गीतात्मकता चौक के घन–चक्कर यथार्थ से पूरी तरह बेखबर होता है।[2]

कुँवर नारायण जीवन में नित संघर्षमय रहने की प्रेरणा देते हैं, जीवन जीने की चाह के आगे कोई भी दुःख, तकलीफ, रुकावटें, सभी कुछ छोटा है। जीवन को जीना, सार्थक जीना सबसे महत्वपूर्ण है व जीवन के अन्त तक संघर्षमय रहने का आवाहन करते हैं।[3]

"कुँवर नारायण के कवि को जीवन में इतनी गहरी आस्था है कि वह जीवन के समस्त संघर्षों, वैषम्यों, विरोधों और प्रश्नों से जूझता हुआ भी जीवन की सार्थकता की तलाश में जुटा रहता है। कवि को आधुनिक जीवन की निस्सार, उदास, असंतोष और अतृप्ति से परिपूर्ण निष्प्राण बेचैनी भरी व्यर्थ–सी बोझिल–जिन्दगी का कितना गहरा, सहज तथा सच्चा अनुभव है, वह जानता है कि विश्रृंखलित जीवन मूल्यों, विसंगतियों, संघर्षों निराश्रय और निस्सारता ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के जीवन को कितना विचित्र बना दिया है। जीवन की इन समस्त विसंगतियों, संघर्षों, विषम परिस्थितियों, घृणास्पद जीवनानुभवों से जूझते हुए मानव को कवि निराश नहीं होने देता, उसको मानव की शक्ति में विश्वास है, वह मानव को अनास्था, अविश्वास, मूल्यहीनता और भटकन के बीच से निकालकर जीवन के राजमार्ग पर पहुँचा देने के लिए कृतसंकल्प है।"[4]

कुँवर नारायण ने जीवन की राह दिखलाते हुए यह बताने की कोशिश की है कि बुद्धिमान, कर्मठ व निरन्तर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने वाले मानव विषम परिस्थितियों को भी अपनी ओर कर भाग्य का निर्माण करते हैं। कुँवर नारायण के कवि का यह दृढ़ विश्वास है कि बुद्धिमान, स्वतंत्र, संयमी और कर्मशील मानव अपनी परिस्थितियों को इच्छानुसार दिव्य रूप प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है।[5]

कवि जीवन के मूल्य से भली भाँति अवगत है, वे केवल वाहय एवं भौतिक सुखों को जीवन जीने के लिए पर्याप्त नहीं मानते, प्राणी को मनुष्य बनने के लिए आन्तरिक अनुभूतियों, अपनी कल्पनाशक्ति, अपनी वैशिष्ठता को भी प्रदर्शित करना चाहिए। नवीनता की आग्रही कविताओं में निश्चित रूप से जीवन मूल्य प्रदर्शित होता है, प्रयोगवादियों ने नयी कविता के माध्यम से जीवन मूल्यों को उजागर किया है व जीवन की सार्थकता पर बल दिया है। इसका अनुसरण कुँवर नारायण ने करते हुए 'आत्मजयी' की रचना की व अपनी कविताओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला व मानव को नित कर्त्तव्य परायण रहने की प्रेरणा दी।

इस बात को लेकर कोई दोराय नहीं है कि कुँवर नारायण के काव्य–जीवन में आस्था जगाने वाले हैं व जीवन मूल्यों का महत्व समझाने वाले हैं।

क्षणवादी दृष्टि का अनुभव संसार –

''नयी कविता'' की प्रवृत्तियों की परीक्षा करने पर उसकी सबसे पहली विशिष्टता जीवन के प्रति उसकी आस्था में दिखाई पड़ती है। आज की क्षणवादी और लघु–मानववादी दृष्टि जीवन मूल्यों के प्रति नकारात्मक नहीं, स्वीकारात्मक दृष्टि है। मनोविज्ञान द्वारा उद्घाटित सत्यों ने यह प्रमाणित किया है कि हम क्षणों में जीते हैं। क्षणों की अनुभूतियाँ सम्पूर्ण जीवनानुभूति की बाधक नहीं बल्कि साधक है। क्षणों को सत्य मान लेने का अर्थ होता है– जीवन की एक–एक अनुभूति को, एक–एक व्यथा को, एक–एक सुख को सत्य मानकर जीवन को सघन रूप से स्वीकार करना है।''[6]

''नयी कविता'' में क्षणों की अनुभूतियों को लेकर बहुत–सी मर्मस्पर्शी और विचार–प्रेरक कविताएँ लिखी गयी है। ये कविताएँ कुछ क्षणों का लघु प्रसंगों का, लघु दृश्यों का चित्रण नहीं करती, बल्कि कुछ संगत और असंगत बिम्बों के माध्यम से क्षणों की परिधि में उफनते जीवन की संश्लिष्टता को मूर्तिमान कर देती है। नयी कविता जीवन को अनुभूति के क्षणों में पकड़ने की पक्षपातिन है।''[7]

जगदीश गुप्त के अनुसार –

'चक्रव्यूह' की अनेक कविताएँ क्षण की अनुभूति से आपूरित एवं अनुप्राणित है। फिर भी तत्वतः वे उपर्युक्त आरोप (क्षणवाद) का प्रतिवाद करती है निर्विशेषतत्व के स्थान पर विशेषतत्व, तारल्य के स्थान पर विचार की सुस्थिरता और रुग्णता की जगह मानसिक निरूजता उसमें लक्षित होती है। [8, 9]

रामवचन राय के अनुसार –

''इन काव्यों के माध्यम से कुँवर नारायण अपने एक–एक क्षण को युगों–युगों तक सुरक्षित कर लिया है, मन में अचानक स्फटित होने वाली किसी अप्रत्याशित संवेदना की गहरी अनुभूतियों का एक जाल सा मस्तिष्क बुनने लगता है और उसे सुरक्षित करने का प्रयास सा ये कविताएँ प्रदर्शित होती हैं। उसकी चेतना का प्रवाह जीवन के प्रत्येक क्षण में उसी तरह अनुस्यूत होकर आगे बढ़ता है। जिस प्रकार 'नीशतारिनी' तट के एक–एक रसिकता कण को चूमती हुई आगे बढ़ती है।''[10]

कुँवर नारायण के काव्यों में यह क्षणवादी प्रकृति पाश्चात्य प्रभाव से प्रभावित होती नजर आती है।

'आत्मजयी' में कवि ने क्षण को वर्तमान तक सीमित न रख स्मृतियों में उसकी मार्मिकता को सुरक्षित रखा है, जो अतीत में होकर भी वर्तमान में निःसंकोच प्रवेश करता दिखाई पड़ता है।[11]

एक क्षण के लिए कवि यह विकल्प चुनता है, आत्महत्या, किन्तु मृत्यु जीवन को पूर्णरूपेण अन्तिम छोर प्रदान नहीं करती, उसके मन के द्वन्द को शान्त करना मृत्यु की परिधि के बाहर है, इसी कारण शायद वह इसी प्रश्न के साथ अपने काव्य संग्रह को विराम लगाता है।[12]

अन्य प्रयोगवादी कवियों ने भी इस क्षणवादिता को अपने काव्य में अनुस्यूत किया है, किन्तु उनका यह क्षणवाद भौतिकवादिता व भोगवाद का पर्याय बनकर रह गया। परन्तु कुँवर नारायण ने क्षणवाद की अनुभूति अन्तःकरण से किया व उनके काव्यों में यह दिखाई भी पड़ा कहीं पर भी क्षणवाद का घृणास्पद स्वरूप देखने को नहीं मिला, उन्होंने क्षण–क्षण की अनुभूति में स्वयं की अभिव्यक्ति दी है व इनके क्षणवाद में पाश्चात्य प्रभाव देखने को मिलता है परन्तु पाश्चात्य प्रभाव को उन्होंने भारतीय स्वरूप

प्रदान किया है और काव्य में देश की मिट्टी की महक भी सहज ही महसूस की जा सकती है।

काव्य भूमि का भावसबलताः

कवि का अपने काव्यों के साथ भावनात्मक रिश्ता होता है। किन्तु प्रयोगवादी कवियों में अतियथार्थवादी होने के आरोप लगते रहते है और कुँवर नारायण भी इससे अछूते नहीं रहे है। उनकी काव्य रचनाएं यथार्थ की भूमि पर सत्य को खोजती हुई प्रदर्शित हुई है, हालांकि कल्पनाओं से उन्होंने परहेज नहीं किया। मेरा मानना है कि कवि कल्पना और भाव तीनों के संयोजन के बिना काव्य की कल्पना असम्भव सी लगती है, हाँ नयी कविता बीसवीं और इक्कीसवीं सदी का प्रतिनिधित्व करती है, तो इनके कवि थोड़े आधुनिक और यथार्थवादी हो सकते है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि इनके काव्यों में भावों की अनदेखी नहीं की गयी है।[13]

काव्योपलब्धियाँ एवं समग्र आकलन :

कुँवर नारायण के काव्य संग्रह सन् 1956 से लेकर सन् 2008 तक निरन्तर कुछ–कुछ समय अन्तराल पर प्रकाशित होते रहे हैं, व आप समीक्षकों व आलोचकों के प्रमुख आलोचना के केन्द्र बिन्दु बने रहे है। आपकी प्रथम काव्य रचना एवं काव्य संग्रह 'चक्रव्यूह' के रूप में सन् 1956 में प्रकाशित हुई। इस तरह संग्रह में लगभग 70 कविताएँ संकलित है।[14]

निष्कर्ष :

कुँवर नारायण रचना धर्म पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि मैं समझता हूँ कि एक कवि अपनी रचना से पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं होता है शायद कविता के साथ एक जीवित सम्बन्ध भी बन जाता है, उसके साथ काम करते–करते जैसे एक बच्चे को बड़ा होते देखे, कभी उसे मनमाने तो कभी अनमने कौतुक से खेलता है और देखें कि एक दिन वह बड़ा हो गया, फिर भी यहीं लगता रहे कि नहीं वह दुनियां का सामना करने लायक प्रौढ़ शायद नहीं हुआ। मेरे लिए कविता लिखना शब्दों के माध्यम से जीवन को देखने का एक तरीका है और रचनात्मक लेखन एक जीती जागती प्रतिक्रिया है – भावनात्मक आग्रही और काफी हद तक अनिश्चितताओं भरा और शायद उसका ऐसा होना ही उसका सबसे बड़ा आकर्षण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. कुँवर नारायण का संसार, यतीन्द्र मिश्र, पृष्ठ 111
2. कुँवर नारायण उपस्थिति, यतीन्द्र मिश्र, पृष्ठ 405
3. कुँवर नारायण का संसार, यतीन्द्र मिश्र, पृष्ठ 187
4. छायावादोत्तर हिन्दी कविता, एक विवेचना, डॉ. कृष्णदेव शर्मा, डॉ. माया अग्रवाल, पृष्ठ 145
5. वही, पृष्ठ 146
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ 629
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ 631
8. चक्रव्यूह, कुँवर नारायण, पृष्ठ 125
9. छायावादोत्तर हिन्दी कविता, डॉ. कृष्णदेव शर्मा, डॉ. माया अग्रवाल, पृष्ठ 12
10. चक्रव्यूह, कुँवर नारायण (स्वयं की अभिव्यक्ति), पृष्ठ 126
11. आत्मजयी, कुँवर नारायण, पृष्ठ 73
12. आत्मजयी, कुँवर नारायण, पृष्ठ 118
13. कुँवर नारायण उपस्थिति, यतीन्द्र मिश्र, पृष्ठ 88
14. चक्रव्यूह, (मूल्य) कुँवर नारायण, संसार, यतीन्द्र मिश्र, पृ.क्र. 35.